क्या आप स्वयं से प्रेम करते हैं ?

तथ्य और भ्रम

लेखकः मुहम्मद मुनावर अल-हुनैनी
कुरान देखभाल के लिए चैरिटी सेंटर के निदेशक
खरज – सऊदी अरबिया

अनुवादः मुहम्मद शाहिद करीम

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على نبينا محمد وآله وسلم، وبعد!

प्रिय मित्रो। आप को एक ऐसी पुस्तक प्रदान कर रहा हूं जिसे पढ़ने में आनंद आऐ गा, यह अपने विषय में काफी महत्वपूर्ण है, यह विभिन्न प्रकार की सोच और आचरण रखने वाले इन्सानों की अजीब व ग़रीब चीज़ों के बारे में बेहद सच्ची और स्पष्ट पुस्तक है।

मैं ने बहुत सारे समकालीन धर्मों का अध्ययन किया और बहुत सारे लोगों से इस बारे में बात कीया, मैं ने पाया कि बहुत सारे लोग अपने धर्म के बारे में कोई चिंता नहीं करते, और न उस के सत्य या असत्य की पुष्टि के लिये कोई जॉच पड़ताल करते हैं।

इस का कारण उन के अपने पुर्खों से चली आ रही विरासत हैं और वह यह है कि उन के जितने भगवान हैं चाहे वह जानवरों की रुप में हों या अन्य प्राणियों की रुप में, सब के अन्दर असली भगवान (अल्लाह) की आतमा प्रवेश किये हुए है, जिस ने भी इन चीज़ों की पूजा किया गोया कि उस ने असली निर्माता और रोज़ी देने वाले की पूजा किया।

और अन्य समूहों ने कहा कि भगवान मनुष्य में से ही है जैसे बुद्धा और ईसा मसीह, यही उन के पापों का बोझ उठायें गे, और अल्लाह के पास उनकी सिफारिश करें गे, और इसे बड़ी सादगी से लिया, अपने धर्म से पूरी तरह बेख़बर रहे, और उन से वास्तविकता, और मृत्यु के बाद क्या होगा यह सब चीजें गाएब हो गईं, गोया कि धर्म एक मंसूब करने वाली चीज़ हो कर रह गया।

उन की मान्यताओं (अ़क़ीदे) से अस्पष्ट होता है यह लोग इस बात पर विश्वास करते है कि वे भिन्य चीज़ों जैसे इन्सान, जानवर, अन्य प्राणियों की पूजा के माध्यम से एक ही भगवान की पूजा करते हैं

सवाल यह है कि यह लोग इन कमज़ोर प्राणियों को छोड़ कर सिर्फ अल्लाह की पूजा क्यों नहीं करते, जब कि इन प्राणियों का हाल यह हैं कि अंत में यह मर जाती हैं या फिर उन में से कुछ खत्म हो जाती हैं जैसे आग, पहाड़ और नदियों। क्या इन के पास कोई स्पष्ट वैज्ञानिक तर्क है कि यह चीजें भगवान हैं, या यह कहा जाये कि यह लोग स्वयं से प्रेम नहीं करते, या अपने अंततः, भाग्य, और प्रसन्नता की खोज करना पसंद नहीं करते, या यह लोग बिल्कुल मूर्ख हैं।

यह वह चीजें हैं जिस ने मुझे मजबूर किया कि उन की मान्यताओं (अ़क़ीदे) का अध्ययन किया जाये, यह जाना जाये कि उन की पूजा और जिन को पूजते हैं कहां तक सत्य है, ताकि सत्य और असत्य की पहचान हो सके, उन के अन्दर जागरूपता आये, और ऐसा सही निर्णय ले सकें कि कभी उस पर खेद न हो।

इस पुस्तक को संक्षेप में लिखा है और उन ही चीज़ों का उल्लेख किया है जो सब के लिये महत्वपूर्ण है, ताकि इस दुनिया में पाये जाने वाले मशहूर धर्मों के अक़ीदे की सच्चाई को कम समय में समझना आसान हो।

विज्ञान ऐसा प्रकाश है जिस से रास्ते प्रकाशित होते हैं, अल्लाह की पूजा ही सही स्केल है जो बताये गा कि अल्लाह का आज्ञाकारी कौन है और पापी कौन है।

इन्सान खुद निर्णय कर सकता है कि प्रलोक में उस का ठेकाना क्या होगा, स्वर्ग या नरक, स्वर्ग में उस समय जायेगा जब वह अल्लाह के बताये हुये पध्दति के अनुसार उस की पूजा (इबादत) करे, और नरक में उस समय जाये गा जब वह अल्लाह के आज्ञा का उलंघन करे, या बिना सत्य विज्ञान के उस की पूजा (इबादत) करे।

इसी चीज़ को हम निम्नलिखित धर्मों में तलाश करें गे:

हिंदू धर्म:

हिंदू धर्म को मान्ने वाले जानवरों जैसे गाय, बंदर और चूहा आदि की पूजा करते हैं और जानवरों के अलावा कुछ दूसरी चीज़ों जैसे आग, पहाड़, नदी, सूरज और चन्दर्मा की भी पूजा करते हैं, उन के बहुत सारे भगवान हैं। वे कहते हैं कि उन का एक भगवान वह है जिस ने इस दुनिया का निर्माण किया है, एक भगवान वह है जो उन की रक्षा करता है, और एक भगवान वह है जो उनका विनाश करता है। यह लोग उन भगवानों के लिये ऐसे ऐसे क्रिया क्रम करते हैं जिसे बुद्धि स्वीकार नहीं करती। वे अपने मुरदों को जलाते हैं इस ख्याल से कि भगवान की पकड़ से बच जायें गे।

कहा जाता है कि हिन्दू धर्म में करोड़ों भगवान हैं, हिन्दू धर्म को मानने वालों में से ऐसे बहुत सारे लोग है जो एक से अधिक भगवानों की पूजा करते हैं।

हिन्दू धर्म बहुत ही उलझा हुआ धर्म है उस के मान्यताओं (अ़क़ीदे) को समझ पाना बहुत ही कठिन है, तथा यह सिद्ध नही है कि हिन्दू धर्म किसी पवित्र किताब पर निरभर करता है, परन्तु वे मानते हैं कि इस संसार का एक भगवान (अल्लाह) है, लेकिन फिर भी उसे छोड़ कर उसी की बनाइ हुई चीज़ो की पूजा करते हैं।

बोध्य धर्म:

बोध्य धर्म के मान्ने वालों को बुद्धा के काम काज बहुत अच्छे लगे, उहों ने कहा कि वह अच्छी बातों का आदेश देता है, बुरी बातों से रोकता है, और उसकी सारी चीजें भली हैं, यहां तक तो ठीक है लेकिन यह कहीं नहीं मिलता कि उस ने दावा किया हो कि वह भगवान है, या भगवान का बेटा है, या भगवान का दूत है, या वह जो कुछ कर रहा है वह भगवान का आदेश है, उस की ऐसे ही मृत्य हुई जैसे अन्य लोग की होती है, उस की सारी शिक्षाओं में

इस बात की नसीहत की गई है कि आत्मा और शरीर को पीड़ित किया जाये, मोटी झोटी जिन्दगी गुजारी जाए और आत्मा को यौन इच्छा और सुख से दूर रखा जाये, ये सारी शिक्षाऐं कोई पूजा नहीं थीं जिस का लक्ष्य ये हो कि इस माध्यम से बुद्धा की प्रशंसा की जाये गी और न ही यह लक्ष्य था कि उस अल्लाह को प्रसन्य किया जाये गी जो दाता, प्रजापति और रोज़ी देने वाला है।

कुछ अन्य लोग यह कहते हैं कि बुद्धा मानव जाति का उद्धारकर्ता, और मुक्तिदाता है जैसा कि ईसाई हज़रत ईसा के बारे में कहते हैं। यह बात जानकारी में रहनी चाहिये कि बुद्ध धर्म के मान्ने वाले बुद्ध धर्म के सत्य होने में विभिन्न राय रख्ते हैं इस लिये कि उस का कोई मूल नहीं है और न कोइ ऐसा स्रोत है जिस की ओर उस का अनुपात किया जाये। और यह स्पष्ट रूप से एक ऐब है।

अगर आप अल्लाह को छोड़ की अन्य चीज़ों की पूजा करने वालों से अल्लाह की विशेषताओं के बारे में प्रश्न करें तो वे उत्तर दें गे कि अल्लाह ही प्रजापति और रोज़ी देने वाला है, वही मारने वाला और जीवन देने वाला है, वह सब कुछ सुन्ता और देख्ता है, वह अनदेखी चीज़ो (ग़ैब) की जानकारी रखता है, वह ऐसा शक्तिशाली है कि उस पर विजेता नहीं पाई जा सकती, वह किसी का मोह्ताज नही है, वह जीवित है कभी उसे मौत नही आये गी, और उन के ईश्वर बुद्धा के अन्दर इन ईश्वरीय विशेषताओं में से कोइ विशेषता नही पाइ जाती है।

यहूदी धर्मः

अल्लाह ने पैगम्बर मूसा (अलैहिस सलाम) को तौरात दे कर भेजा, और उन की रिसालत को ऐसे चमतकार (मोजज़ात) से साबित किया जिन की क़ुदरत अल्लाह के अतिरिक्त कोइ नही रख्ता, मूसा (अलैहिस सलाम) ने समुन्दर में लाठी मारा तो पानी फट गया और दरमयान में सूखा रासता बन गया, पत्थर पर मारा तो उस से पानी निकलने लगा।

यहूदी गैर यहूदी से दुश्मनी रख्ते हैं, यहूदियों ने ईश्वरीय दूतों की हत्या की, उनका धर्म विश्वास (अकीदा) है कि दोसरों को धोका देना, और अहद व पैमान को तोड़ना दुरुस्त है, समझ्ते हैं कि वह अल्लाह की पसन्दीदा लोग है, इनही लोगो ने तौरात व इन्जील को तबदील किया, इन ही लोगों ने सफवी शीया धर्म की बुन्याद रख्खी, वे ओज़ैर की पूजा करते हैं, और दावा करते हैं कि वह अल्लाह के पुत्र हैं, हालांकि वह एक मनुष्य थे जिसे वे भी जानते हैं, उन के अन्दर कोइ ऐसी विशेषता नही थी जो उन्हें मानव जाति से निकाल कर उस ईश्वर के समान बनादे जो लोगों के निर्माता है, जो जीवन और मृत्य देता है, जो हमेशा से है और हमेशा रहे गा, कभी उसे मौत नही आये गी।

ईसाइ धर्मः

अल्लाह ने हज़रत ईसा (अलैहिस सलाम) को बाइबल देकर भेजा, और उन्हें बहुत सारे चमतकार (मोजज़ात) दिये, वह अल्लाह की अनुमति से पैदाइशी अन्धे, और कोड़ही को ठीक करदेते, मुरदे को जीवित कर देते, उनको बहुत सारे चमतकार (मोज्ज़ात) मिले जो उनके सच्चे दूत होने को प्रसिद्ध करते हैं।

दूत जो कुछ करते हैं वह सब अल्लाह के अनुमति से होता है, अगर अल्लाह की अनुमति न होती तो यह दूत कुछ नही कर पाते। हज़रत ईसा (अलैहिस सलाम) और दुसरे दूतों ने अपनी ओर से कुछ नहीं किया बलकि जो कुछ उन्हों ने किया वह अल्लाह की विशेषतायों में से हैं, उस के अतरिक्त कोइ दूसरा इन सब चीज़ों की क़ुदरत नहीं रखता, हज़रत ईसा (अलैहिस सलाम) से यह बात नहीं मिल्ती कि उन्हो ने कहा हो कि मै ईश्वर हूं, या ईश्वर का बेटा हूं, या तीन ईश्वरों मे से एक हूं।

ईसाई लोग हज़रत ईसा (अलैहिस सलाम) के चमतकार (मोजज़ात) को उन के ईश्वर होने पर दलील बनाते हैं जैसा कि पीछे गुज़र चुका है कि वह पैदाइशी अन्धे, और कोड़ही को ठीक कर देते थे, और मुरदे को जिन्दा।

निः सन्देह ईसा (अलैहिस सलाम) अपने काम काज और विशेषताओं में एक मनुष्य थे और मनुष्य की मौत मरे, वे लोग हज़रत ईसा (अलैहिस सलाम) के ईश्वर होने के बारे में अलग अलग राय रखते हैं, एक गुरुप कहता हैं कि वह ईश्वर हैं, दोसरा गुरुप कहता है कि वह अल्लाह के बेटे हैं, तीसरा गुरुप कहता है कि वह तीन ईश्वरों मे से एक हैं, और इस से आस्चर्य जनक बात यह है कि जब ईसा के ईश्वर होने की सच्चाई के बारे में प्रश्न किया जाता है तो उन के ज्ञानी जवाब देते हैं कि सच्चाई के बारे में न पूछो, यह एक गुप्त की बात है, गोया कि वे अपने मानने वालों के बारे में चाहते हैं कि वे जानवर की तरह हो जाऐं, बुद्धि का प्रयोग बन्द कर दें, गूंगे बहरे हो जायें, सच्चाई की तलाश छोड़ दें, यह चीज़ हद दरजा खतरनाक है, कैसे इन्सान बुद्धि का प्रयोग करना बन्द करदे, ईश्वर ने मनुष्य को कियों बुद्धि दी है, और उसी बुद्धि की कारण मानव जाति को जानवरों पर फज़ीलत दी है।

सत्य यह है कि अल्लाह ने ईसा (अलैहिस-सलाम) को दूत बना कर बनू इज़राईल की तरफ भेजा, उन पर बाइबल उतारी, उन लोगों को बताया कि अल्लाह तआला इन सारी प्राणियों का प्रजापति है, इस को सब मानते हैं, अल्लाह तआला अपने दूत भेजता है यह बताने के लिये कि उस ने मानव जाति को किस उद्देश के लिये बनाया हे, उस की सिक्षायें क्या हैं, उन के बनाने वाले कि इच्छा क्या हे, उन के लिये क्या चीज़ बेहतर है, और यह कहीं नहीं मिलता कि हज़रत ईसा ने कहा हो कि मैं ईश्वर हूं, या ईश्वर का बेटा हूं, या तीन ईश्वरों में से एक हूं।

अगर यह लोग तौरात और बाइबल अध्ययन करते तो यह पाते कि इन पुस्तकों मे बात करने वाला अल्लाह है, हज़रत ईसा कह रहे हैं कि अल्लाह फरमाता है कि ऐसा करो, और ऐसा न करो, यह बड़ी कठोर दलील है कि हज़रत ईसा (अलैहिस-सलाम) दूत हैं, वह अल्लाह कि पूजा, और उसे प्रसन्य करने के लिये तपस्या करते थे, इस के बावजूद उन्हों ने कहा कि वह अल्लाह के बेटे हैं और उस पर यह दलील देते कि वह बिन बाप के पैदा हुए, और उन की बुद्धियों से ओझल हो गये। लेकिन उन्हें मालूम होना चाहिये कि अल्लाह ने आदम को बिन माता पिता के बनाया, हव्वाको बिन माँ के बाप के माध्यम से बनाया, और ईसा को बिन बाप के माँ के माध्यम से बनाया, अल्लाह जो चाहता है करता है, वह जब किसी चीज़ को बनाना चाहता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है।

अगर वे स्वयं के साथ सच्चे होते और उन धर्मों का अध्ययन करते तो उन पर यह बात स्पष्ट हो जाती कि किताबों का उतारने वाला, और दूतों को भेजने वाला अल्लाह तआला ही है जो पृथ्वी पर बसने वाले जिन्नों और इन्सानों के लिए आकाश से पवित्र पुस्तकें देकर एन्जिल्स (फरिशता) भेजता है, वह दूतों को उन लोगों में से चुनता है जिन्हें ईश्वर ने मानव पूर्णता के रूप में बनाया है और ईश्वरीय पैगम्बरी के लिये तैयार किया है, और ईश्वर उन्हें चमतकार (मोजज़ात) देता है जो उन की पैगम्बरी को प्रसिध्य करते हैं, और वह ईश्वर की विशेषताओं मे से हैं अल्लाह के अत्रिक्त कोइ भी मनुष्य उनकी क़ुदरत नहीं रख्ता, और अल्लाह की अनुमति से दूतों के माध्ययम से ज़ाहिर होते हैं।

अल्लाह का न्याय और उस की हिक्मत है कि हर राष्ट्र में उनकी अपनी भाषा में पवित्र पुस्तक देकर दूत भेजता रहा है, और बताता है कि उस के लिये उन पर क्या करना अनिवार्य है, वह किस चीज़ से से प्रेम करता है, और किस चीज़ से घृणा करता है, जैसा कि तौरात, बाइबल और उन से पहले की किताबों में आया है यही कारण है कि अल्लाह तआला उन तमाम लोगों से जो इन किताबों का अध्ययन करते हैं पूछता है कि यदि तुम्हें कोइ बिमारी लग जाए तो क्या तुम ऐसा चिकित्सक तलाश करो गे जो तुम्हारी परिवार से हो या तुम्हारे धर्म पर हो, या तुम को उस के धर्म और उस के परिवार की परवाह न हो गी, अनिवार्य रूप से उत्तर यह हो गा कि एक माहिर चिकित्सक तलाश करो जो मुझे स्वास्थ दे सके, मेरे नज़दीक उस के धर्म और उस की संबंधित का कोइ महत्व नहीं है.

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि स्वास्थ, प्रसन्नता और आजीविका कहां से मिले गी, तो वे जरूर कहेंगे कि भगवान से मिले गी और हर कोई यह जानता है।

जो भी स्वयं के साथ सच्चा है, और स्वयं से प्रेम करता है, तुम उसे पाओ गे कि वह हर उस चीज़ की तलाश में रहता है जो उसे लाभदायक है और है और हर उस चीज़ के बारे में पूछता है जो उसे नुक्सान पहुंचाती है और उस से बचता है।

भगवान की पूजा करना हर मनुष्य के लिए जीवन है, और उस की प्रकृति है, इन्सान अगर खुद झूठे धर्म पर है तो न उसे उस का विरोधी कोइ नुकसान पहुंचा सकता है, और न उस से सहमति रखने वाला उसे कोइ लाभ पहुंचा सकता है अगरचेह वह उस से बहुत प्रेम करता हो।

इन्सान की बहुत सारी विशेषतायें हैं, उन में सब से बड़ी विशेषता ईश्वर की पूजा करना है, वह हमेशा दुनिया और पर्लोक (आखेरत) से संबंधित अपने सारे मामलों में अपना लाभ तलाश करता है, यहां तक कि उस का ह्रदय आश्वस्त हो जाऐ, और अपना संबंध अपने रब से जोड़ता है और अचछा बनाता है, तो ऐसा मनुष्य दुनिया व आखरत में सुख पाता है।

अगर उस का परिवार उस के साथ कोइ समस्या पैदा करें, या उसे डरायें धम्कायें तो उस से बचने का रास्ता भी पाये गा, और वह यह है कि उन के सामने सत्य को स्पष्ट कर दे यद्यपि अप्रत्यक्ष रूप से ही क्यों न हो, वे अक्सर आश्वस्त हो जाते हैं कि यही सच्चा और स्पष्ट धर्म है फिर उस की बात मान लेते हैं, या फिर उस के साथ उत्पीड़न कम कर देते है, और अगर आश्वस्त नही होते तो वह अपने धर्म पर छुपे तौर पर अमल करे यहां तक कि उस के लिये आसानी पैदा हो जोये।

इस्लाम धर्मः

ईश्वरीय धर्मों में इस्लाम अनतिम धर्म है, पवित्र कुरान अनतिम ईश्वरीय किताब है, और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस के अनतिम दूत हैं।

जब लोग सत्य मार्ग से दूर हो गये , अपनी धार्मिक किताबों में मिलावट कर दी, अपने दूतों के बारे में ग़ुलू किया यानी उन को अपने मक़ाम से ऊपर उठाया और उन को ईश्वर का साझी बनाया तो अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस्लाम धर्म के साथ भेजा, इस्लाम धर्म को अल्लाह तआला ने प्रलोक तक सभी मनुष्यों के लिए पसन्द कर लिया है।

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मुझ से पहले दूत (पैगंबर) अपनी ही क़ौम के लिये भेजे जाते थे और मैं पूरी मानवजाति के लिये भेजा गया हूं, अल्लाह का इरशाद है

﴿ قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ٱلَّذِى لَهُۥ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ﴾

سورة الأعراف: ١٥٨

आप कह दीजिये कि ऐ लोगो मैं तमाम लोगों की तरफ उस अल्लाह का पैग़म्बर हूं जिस के लिये आकाश और पृथ्वी की बादशाहत है। (सूरः आराफः 158)

दूसरी जगह अल्लाह ने फरमाया है:

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا كَآفَّةٗ لِّلنَّاسِ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗا ﴾ سورة سبأ: ٢٨

हम ने तुमको सभी प्रकार के लोगों को खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा।

हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पवित्र कुरान के साथ भेजा गया, पवित्र कुरान प्रलय के दिन तक के लिये इन्सानों और जिनों के लिये अमर चमत्कार (मेजज़ा) है।

हर नबी को सच्चाई साबित करने के लिये अल्लाह की ओर से चमतकार (मोजज़ा) दिया गया और उन के मरने के साथ वह भी खत्म हो गया, और उन के बाद उन की किताबों में उनके विद्वानों के ओर से मिलावट कर दी गई, इस समय बाइबल चार हैं उन में से हर एक दूसरे से विभिन्न है, और हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पवित्र क़ुरआन के रूप में जो चमतकार (मोजज़ा) दिया गया वह प्रलोक तक बाकी रहने वाला है, आप के मरने के साथ खत्म नहीं होगा, और अल्लाह तआला ने उसे हर तरह की मिलावट से सुरक्षित कर दिया है, मानवजाति में से कोइ भी मनुष्य उस में कोइ मिलावट नहीं कर सकता, पवित्र कुरान के दुश्मनों ने इस को बिगाड़ने का प्रयास किया लेकिन वे सफल नहीं हो सके।

पवित्र कुरान एक पूर्ण संविधान है इस के माद्धयम से समाज के अन्दर आर्थिक, सामाजिक, और धार्मिक संतुलित कायम होता है।

इस्लाम धर्म दुनिया और प्रलोक (आखेरत) को सुधारने के लिए एक पद्धति है और जब यह धर्म ईश्वरीय है तो इस के पूर्ण संविधान होने में किसी को संदेह नहीं होना चाहिये।

जो व्यक्ति भी इस धर्म पर विचार करेगा तो वह पाये गा कि यह धर्म वैज्ञानिक, मानसिक, और ईश्वरीय तर्कों से प्रसिद्ध सत्य धर्म है, और इसी तरह मंतिक, और इतिहास बताता है कि सत्य धरम सिर्फ इसलाम है, यह धर्म इन्सानी फितरत में दाखिल है।

यह एक सार्वजनिक धर्म है इस में कोइ ऐसी चीज़ नहीं है जो सामान्य लोगों से गुप्त रख्खा गया हो, यह धर्म आदमी और उसके भगवान के बीच संबंध बनाता है।

यह ईश्वर कि ओर से निश्चित चमतकार प्रमाण है ऐसा दुनियां ने कभी नहीं देखा, यह उस ईश्वर का संविधान है जो हर चीज़ का ज्ञान रख्ता है, जो हर चीज़ पर क़ादिर है, और वह सब से बड़ा है, इस धर्म के अन्दर हर जगह और हर समय में चलने की छम्ता है, क्योंकि जिस ईश्वर ने इस को पारित किया है वह इस ब्रह्मांड और उसके प्राणियों का निर्माता है वह जानता है कि क्या चीज़ उन के लिये लाभदायक है और क्या चीज़ हानीकरक है।

भगवान के ब्रह्मांड प्राणियों पर विचार विमश:

यदि आप सूर्य, चन्द्रमा, और ग्रह जैसी चमत्कारिक प्राणियों पर घोर विचार करें तो आप को आश्चर्य होगा कि किस हस्ती ने इन का निर्माण किया है, और इन के ट्रेक सिस्टम को किस ने बनाया है कि वह एक दूसरे से टकराते नहीं, और न कभी अपने ट्रेक से हटते हैं।

यह सब अल्लाह ने मानवजाति को सम्मानित करने और उन की सेवा करने के लिये बनाया है, इन्सान को हर वह चीज़ दी है, जिस से जीवित रहता है, सूर्य गर्मी और प्रकाश प्रदान करता है जिस के बिना इन्सान नहीं रह सकता, रात और उस का अंधेरा इस लिये बनाया कि इन्सान को आराम और सुकून मिले, और दिन और उस की रोशनी इस लिये बनाया है कि इन्सान उस में अपने काम धंधा कर सके, एक जगह से दूसरी जगह जा सके, अपने समय, साल, महीना, और दिनों का हिसाब रख सके।

ब्रह्मांडीय विज्ञान वह विज्ञान है जो इस दुनिया की सारी चीज़ों की उपस्थिति की खोज करता है इन्हीं चीज़ों में से इन्सान भी है, जिस में बराबर तरक्की होती है, उस में तब्दीलियाँ आती हैं, इन सारी चीज़ों के अध्ययन से पता चलता है कि इन का निर्माता बहुत महान है, इस लिये इन्सान को चाहिये कि उसी की पूजा करे, और अपने सभी मामलों में उस की ओर रुख करे।

गैर-मुस्लिम वैज्ञानिक जिन्हों ने इस ब्रह्माण्ड का अध्ययन किया उन्हों ने इस बात को तस्लीम किया कि इस महान ब्रह्माण्ड में एक महान निर्माता है, इसी तरह दूतों की संपुष्टि और उन के समर्थन में उन की महत्व पूर्ण भुमिका रही है।

कुरान करीम भगवान की पढ़ी जाने वाली पुस्तक है, और ब्रह्माण्ड में पाई जाने वाली भिन्न भिन्न प्रकार की चीजें भगवान की देखी जाने वाली खुली पुस्तक है।

आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा खोज की गयी ब्रह्माण्ड के गुप्त राज़ों में से एक राज़ यह है कि आकाश और पृथ्वी के निर्माण की शुरुआत बिल्कुल ऐसे हुई है जैसा कि पवित्र कुरान में बताया गया है, अल्लाह का फरमान है:

﴿ ثُمَّ ٱسۡتَوَىٰٓ إِلَى ٱلسَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٞ فَقَالَ لَهَا وَلِلۡأَرۡضِ ٱئۡتِيَا طَوۡعًا أَوۡ كَرۡهٗا قَالَتَآ أَتَيۡنَا طَآئِعِينَ ﴾

سورة فصلت: ١١

फिर वह (अल्लाह) आकाश की तरफ़ बुलन्द हुआ और वह (आकाश) धुआँ सा था तो उसे और धर्ती को हुक्म दिया कि तुम दोनों चाहे न चाहे आओ, दोनों ने निवेदन किया कि हम खुशी खुशी हाज़िर हैं। सूरः फुस्सेलत 11

दूसरी जगह अल्लाह तआला कहता है:

﴿ أَوَلَمۡ يَرَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَنَّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ كَانَتَا رَتۡقٗا فَفَتَقۡنَٰهُمَاۖ ﴾ سورة الأنبياء: ٣٠

क्या काफिरों ने यह नहीं देखा कि ये आकाश और धरती सब के सब आपस में मिले हुये थे फिर हम ने उन्हें अलग अलग किया। सूरः अल-अंबिया 30

टोकियो और क़ाहेरा में आयोजित विश्व सम्मेलन में खगोल विज्ञान के माहिर मुस्लिम वैज्ञानिकों ने जब गैर-मुस्लिम वैज्ञानिकों के सामने कुरानिक चमत्कार पर बात किया तो उन्हीं कुरआनी वर्सों (आयतों) को पेश किया जो आकाश और पृथ्वी के निर्माण के बारे में बात करती हैं, इन कुरआनी वर्सों (आयतों) सुन कर वहां पर मौजूद वैज्ञानिकों ने बहूत आश्चर्य प्रकट किया और स्वीकार किया कि ये सत्य है वैसा ही है जैसा उन्होंने हाल ही में खोजा है, और कहा कि वैज्ञानिक इस वैज्ञानिक तथ्य तक नहीं पहुंच सके मगर अंतरिक्ष यान और सैटेलाइट कैमरों के आगमन के बाद।

उन्होंने कहा कि यह विज्ञान यानी पवित्र कुरान का विज्ञान किसी मनुष्य का नहीं हो सकता, क्यों कि कुरान उस वक्त उतरा जब पूरी दुनियां में कोई वैज्ञान नहीं था और न कोई ऐसा वैज्ञानिक था जो इस वैज्ञानिक अद्भुत खोज के स्तर पर पहुंचा हो।

निः संदेह यह सत्य उस अल्लाह की ओर है जो इस ब्रह्माण्ड का महान निर्माता है, और उस के राज़ों की जानकारी रख्ने वाला है।

(मोहम्मद की जीवनी) नामी पुस्तक में फ्रेंच दार्शनिक एलेक्स लोआज़ोन ने कहा: हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दुनियां के लिये एक ऐसी पुस्तक छोड़ी है जो फसाहत व बलागत की निशानी है, जो नैतिक्ता का दफ्तर है, और एक पवित्र पुस्तक है,

आधुनिक वैज्ञानिक मुद्दों और आविष्कारों में कोई ऐसा मुद्दा नहीं है जो इस्लामी बुनियादों के खिलाफ हो, इस पर कुरानी शिक्षाओं और ब्रह्मांडीय कानूनों के बीच सामंजस्य पूरी तरह से है।

प्रसिद्ध अंग्रेजी इतिहासकार विल्ज़ान कहते हैं कि सच्चा धर्म जो लोगों के साथ हमेशा चलने वाला है वह इस्लाम धर्म है। यदि कोई व्यक्ति इस बारे में कुछ जानना चाहता है तो उसे पवित्र कुरान और उस में जो वैज्ञानिक सिद्धांत और समुदाय को जोड़ने के लिए जो र नियम हैं उस को पढ़ना चाहिये, यह एक वैज्ञानिक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, और ऐतिहासिक पुस्तक है, और उसके अधिक सिद्धांत और नियम आज तक उपयोग किए जा रहे हैं।

यह गैर-मुस्लिम विद्वानों की गवाही है, यदि ये विद्वान मुसलमान होते, तो लोग उन्हें बदनाम करते और कहते कि ढोंगी इस्लामिक बयान हैं जिस का लक्ष्य यह है कि लोगों को मुसल्मान बनाया जाये, लेकिन अल्लाह की हिक्मत ने चाहा कि यह चमतकार उन

वैज्ञानिकों के माध्ययम से आये जो या तो अनीश्वरवादी हैं या फिर मार्क्सवादी, ताकि दलील बहुत मज़बूत हो जाये, और इस की चमतकारिता बहुत बड़ी हो जाये, और फिर इस प्रकार विश्वास पर उभारने वाली चीज़ बहुत मज़बूत हो जाये गी,अल्लाह ने फरमायाः

﴿ وَقُلِ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمۡ ءَايَٰتِهِۦ فَتَعۡرِفُونَهَاۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ﴾ سورة النمل: ٩٣

और कह दीजिए कि सारी प्रशंसाऐं अल्लाह ही के लिये हैं वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाये गा जिन्हें तुम खुद पहचान लोगे, और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से तुम्हारा रब असावधान नहीं है। सूरः अल-नम्ल 93

पवित्र कुरान में आया है कि मनुष्य की सृष्टि मिट्टी से हुई है, और फिर मां के गर्भ में उसके ग्रोथ के चरणों का उल्लेख किया है, अल्लाह का इरशाद फरमाया हैः

﴿ وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ مِن سُلَٰلَةٖ مِّن طِينٖ ١٢ ثُمَّ جَعَلۡنَٰهُ نُطۡفَةٗ فِي قَرَارٖ مَّكِينٖ ١٣ ثُمَّ خَلَقۡنَا ٱلنُّطۡفَةَ عَلَقَةٗ فَخَلَقۡنَا ٱلۡعَلَقَةَ مُضۡغَةٗ فَخَلَقۡنَا ٱلۡمُضۡغَةَ عِظَٰمٗا فَكَسَوۡنَا ٱلۡعِظَٰمَ لَحۡمٗا ثُمَّ أَنشَأۡنَٰهُ خَلۡقًا ءَاخَرَۚ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحۡسَنُ ٱلۡخَٰلِقِينَ ١٤ ﴾ سورة المؤمنون: ١٢ - ١٤

और निः संदेह हम ने इन्सान को खन्खनाती मिट्टी के सार (खुलासा) से बनाया, फिर उसे वीर्य (मनी) बनाकर सुरक्षित जगह (गर्भ) में रख दिया, फिर विर्य को जमा हुआ खून बनाया, फिर उस खून के लोथड़े को मास का टुकड़ा बनाया, फिर मास के टुकड़े में हडडियां बनायीं, फिर हडडियों पर मास चढ़ाया, फिर एक दूसरी शक्ल में उसे पैदा किया, बाबरकत है वह अल्लाह जो सब से अच्छी रचना करने वाला है। सूरः अल-मोमेनून 12-14

प्रोफेसर मोर कनाडा के टोरंटो विश्वविद्यालय में शरीर रचना और भ्रूण विभाग के प्रमुख हैं उन की इस विषय पर काफी महत्व पुर्ण किताब है, उन से पूछा गया कि क़ुरआनी वर्सेज़ (आयात) जो इन्सान की रचना के बारे में हैं उन में और आधुनिक विज्ञान के माध्ययम से भ्रूण के बारे मे जो तथ्य सामने आऐं हैं, और आप अपने अध्ययन द्वारा जिस नतीजे तक पहुंचे हैं क्या इन दोनों के दरमेयान कोई अंतर्विरोध है

उन्हों ने उत्तर दिया कि इन दोनों में कोई अंतर्विरोध नहीं है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप के दूत हज़रत मुहम्मद को भ्रूण के चरणों, धारणाओं और उसके ग्रोथ के बारे में यह वास्तविक विवरण स्वयं ही मालूम हो गया होगा, उन्हों ने सच कहा है कि यह सब चीज़ें अल्लाह की ओर से है, और पवित्र क़ुरआन अल्लाह का कलाम है।

भ्रूण विज्ञान के विशेषज्ञ थाई प्रोफेसर ताजस जो इस विषय पर होने वाली चर्चा में शुरु ही से शामिल थे तत्काल और बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हों ने घोषित किर दिया कि कोई भी ईश्वर नहीं है सेवाय अल्लाह के और मुहम्मद उस के मैसेंजर हैं और इस्लाम धर्म

को स्वीकार कर लिया और अब हर चिकित्सा सम्मेलन में पवित्र कुरान के चमत्कारों पर चर्चा करते रहते हैं।

समय-समय पर आयोजित सम्मेलनों में भाग लेने वाले अनेक विद्वानों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार किया जब उनके सामने सच्चाई स्पष्टत हो गई।

कुरानिक चमत्कारों का सारांश: पूरा कुरान चमत्कारी (मोजज़ा) है

वैज्ञानिक और मानसिक तथ्यों से प्रसिद्धय कुरानिक चमत्कारों से पता चलता है कि पवित्र कुरान ईश्वर का कलाम है और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह के मैसेंजर हैं, और पवित्र कुरान ने साबित कर दिया कि भगवान वही है जिस ने अकेले मानव जाति का निर्माण किया है, और वह तमाम लोगों को आदेश देता है कि सिर्फ उसी की पूजा की जाऐ, और उसका का कोई साझी नहीं है, वह निर्माता, दयालु, मानव जाति पर कृपा करने वाला है।

और वही इस बात का हक़दार है कि लोग सिर्फ उसी की पूजा करें और किसी को उसका साझी न बनायें। जो लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरी देवी देवताओं की पूजा करते हैं उन के बारे अल्लाह ने क्या कहा है उसे सुनेः

﴿ قُلۡ أَرَءَيۡتُم مَّا تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُواْ مِنَ ٱلۡأَرۡضِ أَمۡ لَهُمۡ شِرۡكٞ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِۖ ٱئۡتُونِي بِكِتَٰبٖ مِّن قَبۡلِ هَٰذَآ أَوۡ أَثَٰرَةٖ مِّنۡ عِلۡمٍ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٤ وَمَنۡ أَضَلُّ مِمَّن يَدۡعُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَن لَّا يَسۡتَجِيبُ لَهُۥٓ إِلَىٰ يَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَهُمۡ عَن دُعَآئِهِمۡ غَٰفِلُونَ ٥ ﴾ الأحقاف: ٤ ـ ٥

आप कह दीजिए कि भला देखो तो अल्लाह को छोड़ कर जिन की तुम दोहाई देते हो, मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन सा हिस्सा बनाया है या आकाश के बनाने में उन की साझेदारी है ? अगर तुम सच्चे हो तो इस से पहले की कोई किताब या कोई ज्ञान (इल्म) मेरे पास लाओ।

और उस से बढ़ कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीजों को पुकारता है जो प्रलोक तक उस की पुकार का जवाब नहीं दे सकती हैं बल्कि वे उन की पुकार से ग़ाफिल हैं। सूरः अल-अह़क़ाफ 4-5

﴿ لَوۡ كَانَ فِيهِمَآ ءَالِهَةٌ إِلَّا ٱللَّهُ لَفَسَدَتَاۚ فَسُبۡحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُونَ ٢٢ لَا يُسۡـَٔلُ عَمَّا يَفۡعَلُ وَهُمۡ يُسۡـَٔلُونَ ٢٣ أَمِ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةٗۖ قُلۡ هَاتُواْ بُرۡهَٰنَكُمۡۖ هَٰذَا ذِكۡرُ مَن مَّعِيَ وَذِكۡرُ مَن قَبۡلِيۗ بَلۡ أَكۡثَرُهُمۡ لَا يَعۡلَمُونَ ٱلۡحَقَّ فَهُم مُّعۡرِضُونَ ٢٤ ﴾ الأنبياء: ٢٢ ـ ٢٤

अगर आकाश और धरती में अल्लाह के सिवाय दूसरे भी ईश्वर होते तो इन में बिगाड़ और फसाद होता, बस अल्लाह अर्श का रब है और वह हर उस चीज़ से पवित्र है, जो ये मूर्तिपूजक बयान करते हैं, वह अपने कामों के लिए किसी के सामने उत्तरदायी नहीं है और सभी लोग उस के सामले उत्तरदायी हैं, क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय दूसरे ईश्वर बना रखे हैं, उन से कह दो लाओ अपना सुबूत पेश करो, यह है मेरे साथ वालों की किताब औप मुझ से पहले वालों का सुबूत, बात यह है कि उन में अधिक तर लोग हक़ से अन्जान हैं, इसी कारण मुंह मोड़े हैं। सूरः अल-अंबिया 22-24

﴿ وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ ﴾ الذاريات: ٥٦

मैं ने जिन्नातों और इन्सानों को सिर्फ इस लिये बनाया है कि वे केवल मेरी पूजा करें। सूरः अज़-ज़ारियात 56

अल्लाह अपनी हिक्मत और न्याय की वजह से किताबें उतारता है, और दूत भेजता है, अल्लाह तआला का इरशाद है

﴿ رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ ٱلرُّسُلِ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴾ النساء: ١٦٥

हम ने खुशखबरी देने वाले और डराने वाले दूत भेजे ताकि लोगों के लिये दूतों को भेजने के बाद अल्लाह तआला पर कोई बहाना न रह जाये और अल्लाह तआला बड़ा ज़बरदस्त और हिक़मत वाला है। सूरः अन-नेसा 165

प्रलोक के दिन सिफारिश:

अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾ وَقَالُوا۟ ٱتَّخَذَ ٱلرَّحْمَٰنُ وَلَدًا سُبْحَٰنَهُۥ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾ لَا يَسْبِقُونَهُۥ بِٱلْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِۦ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِۦ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾ ۞ وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّىٓ إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِۦ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾ ﴾ الأنبياء: ٢٥ - ٢٩

और हम ने तुम से पहले कोई भी दूत नहीं भेजा मगर उस की ओर यह बात वह्ही किया कि मेरे सिवाय कोई सच्चा पूजनीय नहीं है, तो तुम सब मेरी ही पूजा करो।

और मुशरिक कहते हैं कि कृपालू (रहमान) की संतान हैं, (गलत है) वह इस से पवित्र है वे जिन को उस की संतान कहते हैं उस के सम्मानित उपासक हैं, वे उस के (अल्लाह के) समक्ष बढ़कर नहीं बोलते और उस के आदेश पर काम करते हैं।

वह (अल्लाह) उने के पहले और बाद की सभी हालतों से अवगत है और वे किसी की भी सिफारिश नहीं करते सिवाय उन लोगों की जिन से अल्लाह प्रसन्न हो। वे तो खुद उस से डरते और कांपते रहते हैं।

और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के सिवाय मैं पूजनीय हूं तो हम उसे नरक की सज़ा दें, हम ज़ालिमों को इसी तरह सजा देते हैं। सूरः अल-अंबिया 25-29

यह अल्लाह की ओर से चेतावनी है, तमाम दूतों को यह आदेश दे कर भेजा है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजनिय नहीं है, उस की कोई सन्तान नहीं है जैसा कि मूर्ति पूजक गुमान करते हैं कि एन्जिल्स उस की बेटिया हैं यह झूट है यह तो उस के प्रिय उपासक हैं, यह अल्लाह के सामने सत्य के सिवाय कुछ नहीं बोलें गें, और किसी की सिफारिश नहीं करें गे सिवाय उस की जिस से अल्लाह प्रसन्न होगा, जिस ने अल्लाह पर कभी झूट नहीं बोला होगा कि उस के सिवाय कोई और पूजनीय है, उस की कोई औलाद है, या उस की बादशाहत, उस की विशेषतओं और उस के काम काज में कोई उस का साझी है, जो भी अल्लाह पर झूट बांधे गा उस की सज़ा नरक है, और ज़ुल्म करने वालों की यही सज़ा है, अल्लाह का इरशाद हैः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ٢١ ٱلَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ
فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ٢٢ وَإِن كُنتُمۡ فِي رَيۡبٖ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلَىٰ عَبۡدِنَا فَأۡتُواْ
بِسُورَةٖ مِّن مِّثۡلِهِۦ وَٱدۡعُواْ شُهَدَآءَكُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ ٢٣ فَإِن لَّمۡ تَفۡعَلُواْ وَلَن
تَفۡعَلُواْ فَٱتَّقُواْ ٱلنَّارَ ٱلَّتِي وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلۡحِجَارَةُۖ أُعِدَّتۡ لِلۡكَٰفِرِينَ ٢٤ ﴾ سورة البقرة: ٢١ – ٢٤

हे लोगो। अपने उस पालनहार की पूजा करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को बनाया है ताकि तुम परहेजगार हो जाओ जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन और आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की और उस से फल पैदा करके तुम्हें जीविका (रिज़्क) अता किया, अतः यह जानते हुए किसी को अल्लाह का साझी न बनाओ, और अगर तुम्हें उस में जो हम ने अपने बन्दे पर अवतरित (नाजिल) किया है शंका हो और तुम सच्चे हो तो इस जैसी कोई एक सूरः लिख कर लाओ, तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।

फिर अगर तुम ने ऐसा नहीं किया और तुम ऐसा कभी भी नहीं कर सकते तो (उसे सच्चा समझ कर) उस आग से डरो जिस का ईंधन इंसान और पथ्थर हैं जो काफिरों के लिये तैयार की गई है। सूरः अल-बक़रा 21-24

यह अल्लाह की ओर से निवेदन है की केवल उसी की पूजा की जाये इस लिये कि अल्लाह अकेला है, उसी ने सब को वनाया है, वही सब को रोज़ी देता है और सारे संसार पर उस की कृपा है, वही पूजनीय है, उस का कोई साझी नहीं है, जो अल्लाह का पालन नहीं करेगा प्रलोक के दिन नरक उस का ठेकाना होगा और नरक की सज़ा उस के लिये है जो अल्लाह का हक़ मार कर दूसरों को देता है।

कुरान करीम सभी मानवजाति के लिए एक सामान्य संदेश है और इस से पहले की ईश्वरीय किताबें जैसे तौरात, ज़बूर और बाइबल सब को रद्द करने वाला है, यह अल्लाह की ओर से है, न कि हज़रत मुहम्मद (स.) की ओर से, जैसा की अल्लाह का इरशाद हैः

﴿ وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ﴾ آل عمران: ٨٥

जो भी इसलाम के सिवाय कोई और धर्म चाहे गा वह (अल्लाह को) स्वीकार नहीं होगा, और वह प्रलोक के दिन घाटा उठाने वालों में से होगा।

पवित्र क़ुरआन एक पूर्ण संविधान है, अल्लाह तआला कुरआन में बताया है कि पूर्व राष्ट्रों के साथ क्या हुआ और भविश्य में क्या होने वाला है, और वह अस्पष्त करता है कि क्या चीज़ मानवजाति के लिये लाभदायक है और क्या चीज़ हानीकारक ताकि वे उस से बच सकें।

निः संदेह इस्लाम मानवजाति के लिये एक पुर्ण संविधान है, तुम्हें उस में हर वह चीज़ मिलजाये गी जिस की तुम को दुनिया और प्रलोक में ज़रुरत है, और अल्लाह क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता यह चीज़ भी उस में बताई गई है, ताकि दुनिया और आखिरत में तुम्हारे साथ जो कुछ पेश आने वाला है उस से तुम अवगत रहो, क़ुरआन करीम में अल्लाह पर ईमान रखने वालों, पैग़म्बर की बातों को मान्ने वालों और उन पर अ़मल करने वालों के लिये जो सम्मान और शुभकामनाएँ (सआदत) हैं सब कुछ बयान हुआ है।

इसलाम की खूबियॉ:

चेतावनी: हम उस इसलाम की बात करें गे जिस को अल्लाह ने भेजा है, जिस को बयान करने के लिये उस ने पवित्र क़ुरआन उतारा है और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को अंतिम दूत बना कर भेजा है।

रहा कुछ मुसल्मानों का खराब व्यवहार तो इसलाम धर्म इस से नहीं पर्खा जाये गा, इस लिये कि मनुष्य की प्रकृति भिन्य होती है कोई अच्छा होता हैं तो कोई दुष्ट, और ऐसा हर समाज और हर धर्म में पाया जाता है।

इसलाम धर्म हर ऐंगिल से पूर्ण धर्म है क्यों कि यह वह धर्म है जिस को अल्लाह ने पर्लोक तक के लिये अपने मूमिन बन्दों के लिये पसन्द फरमाया है, अल्लाह का इरशाद है:

﴿ ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗا ﴾
سورة المائدة: ٣

आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म मुकम्मल कर दिया, और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिये इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया। सूरः अल-माइदा 3

इस्लाम धर्म की बहुत सारी खूबियाँ हैं उन में से कुछ यह हैं :

1- मुसलमानों के बीच समान्ता (समाजी बराबरी):

इस्लाम की खूबियों मे से एक खूबी ये है कि उस ने तमाम मुसलमानों को आपस में सामान्य बनाया है जन्म के आधार पर कोई छोटा बड़ा नहीं है, किसी गैर अरबी पर अरबी के लिए कोई प्राथमिकता नहीं है और न किसी गोरे के लिये काले पर, हाँ जो ईश्वर का भक्त है, जिस के दिल में ईश्वर का भय है वही ईश्वर के यहाँ बड़ा और सम्मानित है।

इसलाम ने जाहिलियत की उन तमाम चीज़ों को खत्म कर दिया जिस की बुन्याद पर लोग एक दूसरे पर गर्व करते थे जैसे पद, धन, और ताकत आदि, अलल्लाह के दुत मोहम्मद ((सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم: " إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذْهَبَ عَنْكُمْ عُبِّيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَفَخْرَهَا بِالْآبَاءِ: مُؤْمِنٌ تَقِيٌّ، وَفَاجِرٌ شَقِيٌّ: أَنْتُمْ بَنُو آدَمَ وَآدَمُ مِنْ تُرَابٍ لَيَدَعَنَّ رِجَالٌ فَخْرَهُمْ بِأَقْوَامٍ ، إِنَّمَا هُمْ فَحْمٌ مِنْ فَحْمِ جَهَنَّمَ، أَوْ لَيَكُونُنَّ أَهْوَنَ عَلَى اللَّهِ مِنَ الْجِعْلَانِ الَّتِي تَدْفَعُ بِأَنْفِهَا النَّتِنَ " . أبو داود والترمذي

अबू हुरैरा बयान करते हैं कि अल्लाह के दूत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: निः संदेह अल्लाह तआला ने इस्लाम से पुर्व जाहिली युग के अहंकार,

और पुर्वजों पर गर्व को अल्लाह ने खत्म कर दिया, अब या तो नेक मोमिन होगा या फिर बद-बख्त पापी, तुम सब आदम की संतान हो, तथा आदम मिट्टी से बनाये गये थे, पुरुषों को चाहिये कि वे अपने पुर्वजों पर गर्व करना छोड़ दें, वरना वे नरक के कोयलों मे से एक कोयला हों गे, या अल्लाह तआला के नज़दीक वे उस काले कीड़े से भी तुच्छ होंगे जिस के नाक से बदबू फैलती है।

2- मुसलमानों के बीच आपसी सहयोग का आदेश:

इसलाम की खूबियों मे से एक खूबी यह है कि वह मुसलमानों को एक दूसरे की सहायता करने का आदेश दिया है, और पूरी मानवजाति के साथ सहानुभूति और अच्छे व्यवहार करने को प्रोत्साहित किया है, सहीह हदीस में अल्लाह के रसूल ((सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फरमाया है ((आपस में प्रेम, एक दूसरे के साथ दया और सहानुभूति में मुसलमान एक शरीर की तरह हैं, जब उस का एक अंग पीड़ित होता है तो सारा शरीर बुखार और अनिद्रा से प्रभावित होता है।

3- माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार और उन के सम्मान का आदेश:

इसलाम धर्म की एक खूबी यह है कि वह माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश देया है इस लिये कि यह दोनों इस जीवन में बालक की उपस्थिति का कारण हैं, अल्लाह का इरशाद है:

﴿ وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُۥ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَٰلُهُۥ فِى عَامَيْنِ أَنِ ٱشْكُرْ لِى وَلِوَٰلِدَيْكَ إِلَىَّ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٤﴾ وَإِن جَٰهَدَاكَ عَلَىٰٓ أَن تُشْرِكَ بِى مَا لَيْسَ لَكَ بِهِۦ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى ٱلدُّنْيَا مَعْرُوفًا ﴾ سورة لقمان: ١٤ – ١٥

और हम ने इन्सान को उस के माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है उस की माता ने कष्ट पर कष्ट उठाकर उसे गर्भ में रखा और उस की दूध छुड़ाई दो साल में है कि तू मेरी और अपने माता पिता का शुक्रिया अदा कर, मेरे ही पास लौट कर तुम को आना है, अगर वे दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ किसी और को साझीदार बना जिस की तुम्हें जानकारी नहीं है तो उन का कहना न मान, लेकिन दुनिया में उन के साथ भलाई के साथ रह।

4- पाप करने के बाद तोबा स्वीकार करना:

इसलाम धर्म की यह बहुत बड़ी खूबी है कि अल्लाह तआला पाप के बाद तोबा करने वालों की तोबा स्वीकार करता है, और उसे क्षमा कर देता है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿ إِلَّا مَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَٰلِحًا فَأُوْلَٰٓئِكَ يُبَدِّلُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِهِمْ حَسَنَٰتٍ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٧٠﴾ ﴾ سورة الفرقان: ٧٠

((सिवाय उन लोगों के जो पाप के बाद क्षमा चाह लें, ईमान लायें और अच्छे कर्म करें तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों के पाप को अच्छे कर्म में बदल देगा, अल्लाह तआला बड़ा क्षमा करने वाला और कृपा करने वाला है))। सुरः अल-फ़ुरक़ान 70

5- भलाई का प्रचार और बुराई की रोकथाम का आदेश:

इस्लाम धर्म की एक खूबी यह है कि वह इस बात का आदेश देता है कि भलाई का प्रचार किया जाये और बुराई की रोक थाम, पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये, तथा उस के साथ किसी भी तरह का दुर व्यवहार न किया जाये, इस्लाम ने मानव जाति के साथ पशु के साथ भी अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है।

पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) की खूबियॉ और उनकी नैतिकता:

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

﴿ وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ ﴾ الأنبياء: ١٠٧

((और हम ने आप को पूरी दुनिया के लिये रहमत बना कर भेजा है))।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरी मानवजाति के लिये अल्लाह के दूत हैं, वह पूरी दुनिया के लिये रहमत बन कर आये, आप की पैग़म्बरी और आप के आदेशों के पालन के कारण वर्षा होती है, और उस से पूरी दुनिया पशु, पेड़, पौदे, जिन्नात व इन्सान तथा जानवर लाभ उठाते हैं, आर आप ने सारे लोगों तक ईश्वर का संदेश पहुचाया, इस तरह वह पूरी दुनिया के लिये रहमत हैं, जो भी उस की रिसालत (पैग़म्बरी) को स्वीकार करे गा उस के हक़ में रहमत होगी, वह अल्लाह की अनुमति के बाद स्वर्ग में जाये गा, और नरक से नेजात पाये गा।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सब से ज़्यादा नम्र, सब से ज़्यादा दान पून करने वाले, और सब से ज़्यादा दयालु, और मेहरबान थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमायाः

عن أبي هريرة قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ((أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، فَمَنْ تُوُفِّيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَتَرَكَ دَيْنًا فَعَلَيَّ قَضَاؤُهُ، وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ)). صحيح البخاري

मैं मुसलमानों का खुद उन से ज़्यादा हकदार हूं, अगर उन में से किसी की मृत्य हो जाये और उस के ऊपर ऋण हो तो वह मैं चुकाऊं गा, और उस ने जो धन छोड़ा है वह उस के वारिसों का होगा।

वह दासों की निमंत्रण को स्वीकार करते, बीमारों की देख भाल के लिये जाते, अकेले पैदल चलते, हंसी मज़ाक भी करते, और मुंह से सत्य औ भली बात के सेवाय कुछ नहीं बोलते।

वह नोकर चाकर को कभी बुरा भला नहीं कहते, और न उन्हों ने अपने हाथ से कभी किसी को मारा, सेवाय अल्लाह की राह में जिहाद करते हुये, और न आप ने कभी किसी से बदला लिया, सिवाय उस समय जब अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों और उस के नियमों का उल्लंघन किया गया, और जब भी आप को दो चीज़ों में से किसी एक चीज़ के चुन्ने का अख्त्यार दिया गया तो आप ने आसान चीज़ को चुना।

इस्लाम में महिलाओं की स्थिति:

इसलाम घर्म ने महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी है, उसे इसलाम ने जो सम्मान दिया है ऐसा किसी दूसरे धर्म में नहीं है, इस्लाम में महिला पुरुष के समान हैं, अगर उसकी इच्छा हो तो उसे किसी काम काज में और विचार विमश में शामिल किया जाये गा।

عن عائشة رضي الله عنها قالت: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: ((خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهِ، وَأَنَا خَيْرُكُمْ لِأَهْلِي)). رواه الترمذي

मोमिनों की मॉ हज़रत आइशा कहती हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमायाः ((तुम में सब से अच्छा वह मनुष्य है जो अपने परीवार के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला हो, और मैं अपने परीवार के साथ सब से अच्छा करने वाला हूं))। तिरमिज़ी

एक मुसलमान महिला जब बूढ़ी हो जाती है तो वह सम्मानित होती है, लोग उसे सम्मान देते हैं, उस के करीबी लोग उस को दुष्ट लोगों से, और बुरी नज़्रों से सुरक्षित रख्ते हैं।

जबकि पश्चिमी देशों में महिलाए यदि 18 वर्ष की हो जाती हैं तो उसके परिवार के लोग उसे अकेला छोड़ देते हैं, न उन पर खर्च करते हैं, न उन की सुरक्षा करते हैं बल्कि दुष्टों का शिकार बनाकर छोड़ देते हैं, इस चीज़ का सब से बड़ा सुबूत इस की यह हालत है जिस में वह पहुंची है, हालत यह है कि वह अच्छे नैतिक्ता और शालीनता से मुक्त हो चुकी हैं।

पश्चिमी देशों की महिलायें इस दुरदशा में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहुंची हैं, हुआ यह कि उस युध्द में लगभग पांच करोड़ पुरुषों की हत्या हुई, जिस के कारण वे बिना परीवार के हो गईं, और इस बात पर मजबूर होईं कि रोज़ी के लिये पुरुषों के साथ बाज़ारों में काम करें, फिर नतीजा यह हुआ की महिलायें पुरुषों के साथ घुल मिल गईं, बे परदगी आम हो

गई, और सार्वजनिक स्थानों में अश्लील दुर्गटनायें, और बलातकारियां होने लगीं, यह बात जानकारी में रहे कि सारे धर्म में बलातकारी हराम है।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले महिलायें बा पर्दा लेबास में रहतीं थीं, और बहुत सारे लोग अशलील हरकतों को ना पसन्द करते थे।

एक मुसलिम महिला का विवाह अल्लाह के कलाम के माध्यम से और मज़बूत अनुबंध के साथ होता है, और उस के बाद वह पति के घर सम्मान के साथ रहती है, वही घर की मालकिन होती है, वह जो चाहे जिस चीज़ का चाहे आदेश दे, और जिस चीज़ से चाहे मना करे, वह बिल्कुल ऐसे होती है जैसे कोई राजा अपने राजवाड़े में, पति पर यह अनिवार्य होता है कि उस को सम्मान दे, उस के साथ अच्छा व्यवहार करे, और उसे किसी तरह की असुविधा न दे, और यही महिला जब माता के रुप में आती है तो इसलाम में उस के साथ अच्छे व्यहार का आदेश है और अल्लाह तआला उस के अधिकार को अपने अधिकार के साथ बयान करता है, अल्लाह तआला का इरशाद हैः

﴿ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوٓاْ إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِٱلْوَٰلِدَيْنِ إِحْسَٰنًا ﴾ سورة الإسراء: ٢٣

और तेरे पालनहार ने खुला आदेश दिया है कि तुम उस के सिवाय किसी दूसरे की पूजा (इबादत) न करो और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरः अल-इसरा 23)

इस्लाम में एक महिला की सारी जिम्मेदारी उस के परिवार के किसी करीबी पुरुष पर होती है, महिला पर अनिवार्य नहीं है अपने ऊपर खर्च करने के लिये खुद पैसा कमाये, बल्कि उस का करीबी पुरुष उस का सारा खर्च उठाये गा।

सारी प्रशंसायें उस अल्लाह के लिये है जो सारे संसार का पालनहार है और पैगंबर मुहम्मद और उनके परिवार पर दुरूद व सलाम हो।

****